बहुत-बहुत भूखी इल्ली

एरिक कार्ले

प्यारी बहन क्रिस्टा के लिए

बहुत-बहुत भूखी इल्ली

एरिक कार्ले

चांदनी रात में
किसी पत्ते पर
एक छोटा सा
अंडा जन्मा.

अगले इतवार सुबह-सुबह नर्म-गर्म सूरज पूरब के आसमान में कूदता हुआ आया!
उसे देखते ही एक छोटी और बहुत भूखी इल्ली अंडे से बाहर निकल आई.

बाहर आते ही वह खाना ढूंढ़ने लगी.

सोमवार को
उसने एक सेब कुतरा,
लेकिन वह अब भी भूखी थी.

मंगलवार को उसने
दो नाशपातियां खाईं,
लेकिन वह अब भी भूखी थी.

बुधवार को उसने **तीन** पुलम चूसे,
लेकिन वह अब भी भूखी थी.

गुरुवार को उसने चार स्ट्राबेरियां चबाईं.
लेकिन वह अब भी भूखी थी.

शुक्रवार को उसने **पांच** संतरे खाए,
लेकिन वह अब भी भूखी थी.

शनिवार को वह

एक चॉकलेट, एक आइसक्रीम, एक अचार, एक चीज़ का टुकड़ा, एक सलामी की फांक,

एक लॉलीपॉप, एक टुकड़ा चेरीपाई, एक सॉसेज, एक कपकेक और एक टुकड़ा तरबूज चटकर गई.

उस रात उसे बड़े जोर का पेटदर्द हुआ!

अगले दिन फिर से इतवार था.

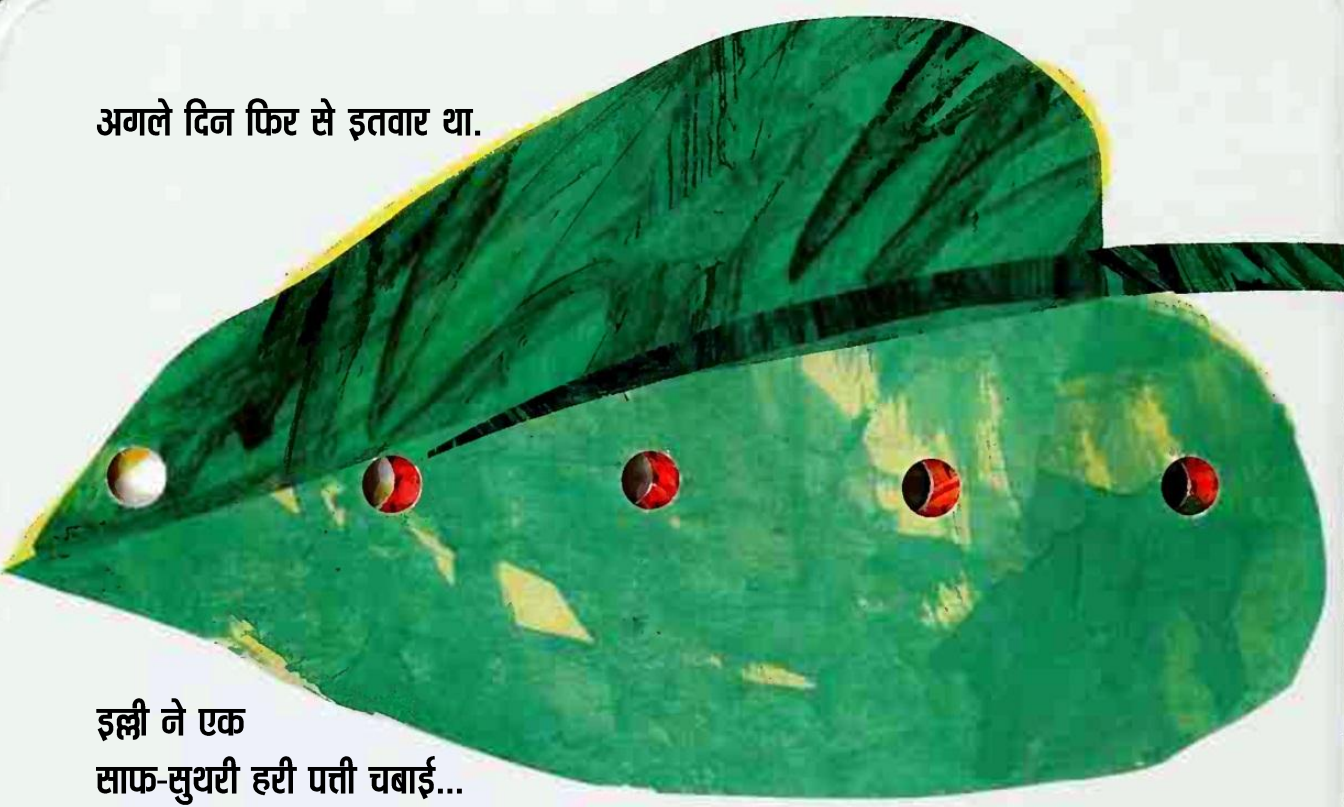

इल्ली ने एक
साफ-सुथरी हरी पत्ती चबाई...

और उसके बाद उसे थोड़ा आराम मिला.

अब उसे जरा भी भूख नहीं थी
और अब वह नन्ही सी इल्ली नहीं थी.

अब वह खूब बड़ी, मुटल्ली इल्ली में बदल चुकी थी.

उसने अपने चारों ओर छोटा सा घर बनाया, जिसका नाम ककून था. इस घर में वह पूरे दो हफ्ते सोई रही. फिर उसने घर में छोटा सा छेद बनाया
और धक्का मारकर बाहर आ गई...

अरे वाह!
इल्ली ख़ूबसूरत तितली
बनकर बाहर निकली!

(अनुवादः आशुतोष उपाध्याय)